Kautilya's Contribution to Political Thought

कौटिल्य के राजनीतिक चिन्तन का राजनीतिशास्त्र के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक दोनों पक्षों का अधिक महत्व है। कौटिल्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' के प्रकाश में आने के बाद पाश्चात्य विचारकों का यह भ्रम दूर हो गया तथा वे यह मानने के लिए बाध्य हुए कि प्लेटो, अरस्तु एवं अन्य यूनानी विचारकों के पूर्व भी भारतीय विद्वानों द्वारा राजनीतिशास्त्र पर मौलिक ग्रन्थों की रचना की जाती रही है। श्री बन्द्योपाध्याय ने इस दृष्टि से ठीक ही कहा है कि "कौटिल्य का अर्थशास्त्र पूर्ववर्ती युग के आध्यात्मवादी प्रचार के विरुद्ध हुई भौतिकवादी प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करनेवाले शासन की कला सबसे पहले लिखे गये सुव्यवस्थित ग्रन्थों में से है।" श्री यू. एन. घोषाल ने भी इस मत का समर्थन करते हुए लिखा है कि "भारतीय उन लोगों की श्रेणी में है जिन्होंने इतिहास के पृष्ठों पर अपनी छाप राजनीति विचार के मौलिक ढांचे की नींव डालने वालों के रूप में छोड़ी है।

राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में कौटिल्य के योगदान को निम्न रूप में देख सकते हैं -

1. पूर्व के राजनीतिक विचारक के राजनीतिक चिन्तन का संग्रह सार - कौटिल्य द्वारा रचित ग्रन्थ अर्थशास्त्र अपने से पूर्व के राजनीतिक विचारक बृहस्पति, भारद्वाज और वातव्याधि आदि के राजनीतिक चिन्तन का संग्रह एवं सार है। श्री कृष्णा राव का यह कथन बहुत उपयुक्त है कि "कौटिल्य का अर्थशास्त्र कौटिल्य के पूर्व की रचनाओं में यत्र तत्र बिखरी हुई राजनीतिक विचारों एवं शासन कला के सिद्धान्तों का संग्रह है। कौटिल्य ने उनके आधार पर एक पृथक और विशिष्ट विज्ञान की रचना करने के प्रयास में उनकी नवीन रूप में व्याख्या की।

2. राजनीतिक चिन्तन को एक पृथक एवं स्वतंत्र शास्त्र के रूप में स्थापना की - कौटिल्य ने राज्य को धर्म की एक शाखा के रूप में विकासित किया और उसे धर्म के उद्देश्यों की पूर्ति करने वाला एक साधन माना। इस प्रकार कौटिल्य ने राजनीति को धर्म से पृथक कर उसको एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में

Ajanta Officer

Scanned with CamScanner

स्थापना की। इसने भारतीय राजनीतिक चिन्तन को पारलौकिक से लौकिक या व्यावहारिक बनाया और इस तरह से उसे धर्म से पृथक कर एक स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान किया।

3. धर्म की तुलना में राजनीति को प्रमुखता प्रदान की- कौटिल्य ने धर्म को राजनीति से पृथक ही नहीं किया वरन् धर्म की तुलना में राजनीति को उच्च स्थान प्रदान किया। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में लिखा है कि "चरित्र एवं लोकाचार का धर्मशास्त्र के साथ जिस विषय में विरोध हो, वहाँ धर्मशास्त्र को ही प्रमाणिक माना जाना चाहिए लेकिन यदि कहीं धर्मशास्त्र का राजनीति से विरोध हो तो वहाँ राजनीति को ही प्रमाण मानना चाहिए।"

4. नियोजित तथा मिश्रित अर्थव्यवस्था का प्रेरक- कौटिल्य का मानना है कि राज्य का कार्य क्षेत्र राजनीतिक ही नहीं, आर्थिक भी है। कौटिल्य का राज्य-राज्य की सारी आर्थिक गतिविधियों में भाग लेता है। वह सार्वजनिक लाभ, मजदूरी तथा वस्तुओं के मूल्य निर्धारित करता है। स्वामियों, श्रमिकों, उत्पादकों और उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करता है तथा आर्थिक विकास के मार्ग में आनेवाली समस्याओं का निवारण करता है।

5. लोक-कल्याणकारी एवं समाज सेवी राज्य की अवधारणा की स्थापना- लोक-कल्याणकारी एवं समाज-सेवी राज्य की स्थापना की अवधारणा यद्यपि एक आधुनिक अवधारणा है। किन्तु कौटिल्य के अर्थशास्त्र की यह पंक्ति " प्रजा सुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्। नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियम् हितम् ।" अर्थात प्रजा के सुख में राजा का सुख है तथा प्रजा के हित में ही राजा का हित निहित है। अतः स्पष्ट है कि राजा का कार्य और दायित्व प्रजा हितकारी कार्यों को सम्पन्न करने में है। इस प्रकार कौटिल्य का राज्य एक विशुद्ध लोककल्याणकारी और समाजसेवी राज्य था तथा उसका स्वरूप आधुनिक लोककल्याणकारी राज्य के समान ही था।

Scanned with CamScanner

6. धर्म-निरपेक्ष राज्य का प्रणेता - कौटिल्य का राज्य धर्म-निरपेक्षता का पक्षधर और सर्वधर्म सम्मान पर आधारित था। वह राजा को स्पष्ट निर्देश देता है कि उसे प्रजा की धार्मिक मान्यताओं में किसी तरह का अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। राज्य में शान्ति और व्यवस्था की दृष्टि से राज्य का धर्म-निरपेक्ष होना आज भी उतना ही आवश्यक है जितना कौटिल्य के समय था। इस तरह कौटिल्य आधुनिक धर्म-निरपेक्ष राज्य का प्रेरक था।

7. व्यवहारिक राजनीति का जनक - कौटिल्य पश्चिमी विचारकों की तरह सिर्फ सैद्धान्तिक राजनीति का चिन्तक ही नहीं, वह व्यवहारिक राजनीति का जनक तथा प्रणेता भी था। जो कुछ उसने सैद्धान्तिक रूप से प्रतिपादित किया, उसे उसने कार्यरूप में परिणत करके भी दिखाया।

8. राजनीति और नैतिकता में सम्बन्ध विच्छेद का निर्माता - कौटिल्य राज्य के अस्तित्व को निरन्तर सुदृढ़ बनाये रखने के लिए उसकी सीमाओं का विस्तार उसका एक आवश्यक कार्य मानता है। इस हेतु उसने शत्रुओं को परास्त करने के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद आदि सभी उपायों के प्रयोग का परामर्श देता है। इस प्रकार वह राज्य हित में नैतिक - अनैतिक सभी साधनों का प्रयोग उचित बताता है। इसे सबसे इस प्रकार वह राजनीति का नैतिकता से सम्बन्ध विच्छेद कर देता है। जिस कार्य को कौटिल्य ने लगभग 2000 वर्ष से भी पूर्व कर दिया था उसे मैकियावेली ने 16वीं शदी में आकर किया।

जो भी हो, राजनीति चिन्तन के क्षेत्र में कौटिल्य का योगदान महत्वपूर्ण है। उसने राज्य की शासन व्यवस्था के विभिन्न पक्षों का विवेचन एक सुदृढ़, विस्तृत, लोककल्याणकारी धर्म-निरपेक्ष तथा यथार्थ राज्य की स्थापना के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए किया है।